संगमरमर उद्योग का विदेशी व्यापार में योगदान

डॉ. दीपा सोनी

चेतना माली

संगमरमर उद्योग का विदेशी व्यापार

विश्व में प्राकृतिक पत्थरों के संसाधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हैं और लगभग प्रत्येक देश महत्वपूर्ण पत्थर का उत्पादन करता है। संगमरमर उद्योग में जिस प्रकार पूंजी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है उसी प्रकार संगमरमर उद्योग में विपणन नीतियां भी महत्वपूर्ण होती हैं। वर्तमान समय में संगमरमर उद्योग को अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाए तो पता चलता है कि संगमरमर उद्योग में बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा है। राजस्थान के संगमरमर उद्योग ने वैश्विक जगत में विशिष्ट पहचान बनाई है। यद्यपि संगमरमर निर्माता को अत्याधुनिक तकनीकी की पूर्ति के लिये विदेशों पर ही आश्रित रहना पड़ता है। खनन एवं प्रसंस्करण (प्रोसेसिंग) इकाइयों में आधुनिकतम यंत्र इटली, जर्मनी एवं चीन इत्यादि देशों से आयात करने पड़ते हैं। भारत का विश्व में संगमरमर उत्पादक के रूप में विशेष स्थान रखने के बाद भी संगमरमर का निर्यात बहुत कम मात्रा में होता है। खुली बाज़ार नीति के अन्तर्गत विदेशी व्यापार में भारत को इटली, चीन, तुर्की एवं जर्मनी जैसे देशों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है जिसके कारण आयात शुल्क एवं राजस्व आय में कमी आ रही है। विदेशी देशों की तकनीकियों के कारण संगमरमर उत्पादकों को बाज़ार में अपना विशेष स्थान बनाने में कठिनाई आ रही है तथा संगमरमर उत्पादन में वृद्धि नहीं हो पा रही है। यदि संगमरमर उद्योग को लगातार प्रोत्साहन मिलता रहे तो भारत का संगमरमर उद्योग पूरे विश्व में अपनी पहचान बना सकता है, साथ ही विदेशी मुद्रा अर्जित करने तथा निर्यात में वृद्धि को भी बढ़ा सकता है।

भारत में संगमरमर का लगभग 90 प्रतिशत उत्पादन अकेले राजस्थान में होता है और 10 प्रतिशत अन्य राज्यों जैसे गुजरात, हरियाणा, जम्मू कश्मीर, उत्तर प्रदेश, पंजाब व झारखण्ड में होता है। राजस्थान से कई प्रकार के विभिन्न रंगों के संगमरमर का निर्यात विदेशों में होता है, जो निम्नानुसार है-

1- राजसमंद जिला - सफेद संगमरमर

2- नागौर जिला - पीला व सफेद संगमरमर

3- उदयपुर जिला - हरा संगमरमर

4- सिरोही जिला - पीला संगमरमर

5- जयपुर जिला - पिस्ता संगमरमर

6- जैसलमेर जिला - पीला संगमरमर

7- बांसवाड़ा जिला - बैंगनी संगमरमर

8- डूंगरपुर जिला - हरा संगमरमर

9- अजमेर जिला - सफेद व पीला संगमरमर

10- अलवर जिला - सफेद संगमरमर

भारत से जिस संगमरमर का विदेशों में सबसे अधिक निर्यात किया जाता है वह है - हरा (ग्रीन) संगमरमर। हरे संगमरमर की सर्वाधिक खदानें राजस्थान में उदयपुर व डूंगरपुर में स्थित हैं। भारतीय हरा संगमरमर विश्वभर में प्रसिद्ध है। हरे संगमरमर में कई विभिन्न किस्में भी उपलब्ध हैं। भारतीय हरे संगमरमर का निर्यात अफ्रीका, यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, मध्य पूर्व ओर कई एशियाई देशों में किया जाता है। वर्ष 2019 में मकराना, नागौर (राजस्थान) के सफेद संगमरमर को ग्लोबल हेरीटेज में शामिल किया गया है जिससे मकराना के सफेद संगमरमर का भी विदेशों में भी निर्यात धीरे-धीरे शुरू होने लगा है। अब वर्ल्ड हैरिटेज में शामिल होने के बाद हरे संगमरमर के साथ-साथ सफेद संगमरमर की भी विदेशों में मांग बढ़ने की संभावना है।

हार्मोनाइज्ड सिस्टम कोड (HS- code)

विदेशों से वस्तुओं का आयात-निर्यात करने के लिए सभी वस्तुओं के एच.एस. कोड जारी किए जाते हैं।

1- एच.एस. कोड का पूरा नाम हार्मोनाइज्ड सिस्टम कोड है।

2- एच.एस. कोड 4,6 व 8 अंकों का कोड होता है जिसे वर्ल्ड कस्टम ऑर्गेनाइजेशन (WCO) द्वारा विकसित किया गया है।

3- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यह किसी उत्पाद/वस्तु का नामकरण होता है, जिसकी सहायता से विश्व में इसकी पहचान की जाती है।

4- विश्व के लगभग 200 से अधिक देश एच.एस. कोड प्रणाली का उपयोग करते हैं जिसमें भारत भी शामिल है।

5- एच.एस. कोड प्रणाली से किसी उत्पाद के व्यापार की प्रक्रिया में समानता बनाए रखने और उसके विदेशी व्यापार की लागत कम करने में मदद मिलती है।

6- डब्ल्यूसीओ के अनुसार इस प्रणाली में अब तक करीब 1500 उत्पादों के समूह हैं जिसमें सभी उत्पादों का स्वयं का 4, 6 व 8 अंकों का एच.एस. कोड है।

संगमरमर से संबंधित उत्पादों के एच.एस. कोड तीन प्रकार के होते हैं - (1) 2515 (2) 6802 (3) 6815

1- 2515 - संगमरमर के एच.एस. कोड 2515 के अन्तर्गत संगमरमर एवं टरवरटाईन (चूना पत्थर का प्रकार) से संबंधित उत्पादों को शामिल किया जाता है।

2- 6802 - संगमरमर के एच.एस. कोड 6802 के अन्तर्गत हस्त एवं शिल्प निर्मित संगमरमर से संबंधित स्मारकों, ग्रेनाइट पत्थर एवं केल्केरियस पत्थर से संबंधित उत्पादों को शामिल किया गया है।

3- 6815 - संगमरमर के एच.एस. कोड 6815 के अन्तर्गत सभी पत्थरों एवं खनिजों से संबंधित लेखों को शामिल किया गया है।

औसत वृद्धि दर

भारत द्वारा कुल आयात-निर्यात एवं संगमरमर के आयात-निर्यात तथा राजस्थान द्वारा कुल निर्यात एवं संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

भारत एवं राजस्थान में संगमरमर के आयात-निर्यात की औसत वृद्धि दर

(प्रतिशत में)

वर्ष	भारत				राजस्थान	
	कुल निर्यात	संगमरमर का निर्यात	कुल आयात	संगमरमर का आयात	कुल निर्यात	संगमरमर का निर्यात
1996-2000	13.46	14.74	12.70	23.29	6.61	20.54
2001-05	16.15	13.15	21.02	23.32	20.05	21.54
2006-10	18.25	9.48	18.72	22.09	13.07	9.46
2011-15	8.24	12.08	7.83	20.47	8.34	22.70
2016-18	2.02	-1.78	3.28	0.68	11.68	4.80

स्रोत : डीजीएफटी व निर्यात विभाग (उद्योग भवन, जयपुर) द्वारा प्रकाशित आँकड़ों का उपयोग कर स्वयं द्वारा गणना।

नोट : राजस्थान के कुल आयात व संगमरमर आयात के आँकड़ें उपलब्ध नहीं होने के कारण केवल राजस्थान के कुल निर्यात व संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर को दर्शाया गया है।

उपर्युक्त तालिका के अनुसार वर्ष 1996-2000 के दौरान भारत में संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर (14.74 प्रतिशत) उसके कुल निर्यात (13.46 प्रतिशत) से अधिक थी। निरपेक्ष रूप से वर्ष 1996-2000 के मध्य भारत में संगमरमर के लगभग 10 करोड़ 9 लाख टन के भण्डार थे जो अभी तक के सभी वर्षों की तुलना में अधिक थे। वहीं वर्ष 2001- 2010 के मध्य भारत द्वारा संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर उसके कुल निर्यात से कम आंकी गई क्योंकि वर्ष 2001-10 के मध्य भारत में संगमरमर का उत्पादन कम हुआ। वर्ष 2011-15 के अंतराल में पुन: भारत में संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर (12.08 प्रतिशत) कुल निर्यात (8.24 प्रतिशत) से अधिक रही क्योंकि वर्ष 2001 में भारत में संगमरमर का उत्पादन 4425284 हजार रूपये था जो वर्ष 2015 में बढ़कर 15781203 टन हो गया। अंत में वर्ष 2016-18 के अंतराल में भारत में संगमरमर निर्यात की औसत वृद्धि दर (-1.78 प्रतिशत) ऋणात्मक रही क्योंकि वर्ष 2016-18 के मध्य संगमरमर कर की दर में वृद्धि (5 प्रतिशत से बढ़कर 18 प्रतिशत) हुई जिसके कारण भारत में संगमरमर का उत्पादन वर्ष 2016-18 के मध्य कम होकर 14028976 टन हो गया जिसके परिणामस्वरूप संगमरमर निर्यात में भी कमी हुई।

भारत एवं राजस्थान में संगमरमर निर्यात का प्रतीपगमन विश्लेषण

भारत व राजस्थान में संगमरमर निर्यात की दीर्घकालीन प्रवृत्ति का अध्ययन करने के लिये हमने समय के साथ (प्रथम दो समीकरण) सरल प्रतीपगमन समीकरण मॉडल का आकलन किया है, साथ ही भारत

एवं राजस्थान में संगमरमर निर्यात का भारत एवं राजस्थान के कुल निर्यात के साथ लोच ज्ञात करने हेतु सरल प्रतीपगमन मॉडल (समीकरण 3, 4 व 5) का प्रयोग किया है।

समीकरण 1 - $y = \alpha + \beta(t) + \mu$

(निर्भर चर) y = भारत का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

(स्वतंत्र चर) t = समय

समीकरण 2 - $y = \alpha + \beta(t) + \mu$

(निर्भर चर) y = राजस्थान का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

(स्वतंत्र चर) t = समय

समीकरण 3 - $(Ln)y = \alpha + \beta Ln(x) + \mu$

(निर्भर चर) y = भारत का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

(स्वतंत्र चर) x = राजस्थान का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

समीकरण 4 - $(Ln)y = \alpha + \beta Ln(x) + \mu$

(निर्भर चर) y = भारत का कुल निर्यात (लॉग रूप में)

(स्वतंत्र चर) x = भारत का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

समीकरण 5 - $(Ln)y = \alpha + \beta Ln(x) + \mu$

(निर्भर चर) y = राजस्थान का कुल निर्यात (लॉग रूप में)

(स्वतंत्र चर) x = राजस्थान का संगमरमर निर्यात (लॉग रूप में)

उपर्युक्त पाँचों सरल प्रतीपगमन समीकरण को दो प्रतिदर्श काल में विभक्त किया है- प्रथम प्रतिदर्श काल वर्ष 1996-2009 एवं द्वितीय प्रतिदर्श काल वर्ष 2010-2018 इससे प्राप्त परिणाम को निम्न तालिका में दर्शाया गया है।

भारत एवं राजस्थान में संगमरमर निर्यात की दीर्घकालीन प्रवृत्ति

	1996-2009	2010-2018	1996-2018
समीकरण 1 - निर्भर चर : भारत का संगमरमर निर्यात			
α	6.35	7.15	6.50
β (समय)	0.13	0.08	0.11
P	0.00	0.00	0.00
R^2	0.96	0.83	0.97
D.W.	1.80	1.73	1.87
F	328.25	35.60	753.77
समीकरण 2 - निर्भर चर : राजस्थान का संगमरमर निर्यात			
α	4.24	5.30	4.43
β (समय)	0.20	0.12	0.17
P	0.00	0.00	0.00
R^2	0.96	0.76	0.96
D.W.	1.06	1.04	1.05
F	311.80	22.50	648.67
समीकरण 3 - निर्भर चर : भारत का संगमरमर निर्यात			
α	3.61	4.24	3.56
β (राजस्थान का संगमरमर निर्यात)	0.65	0.58	0.66
P	0.00	0.00	0.00
R^2	0.96	0.87	0.98
D.W.	2.57	2.08	2.50
F	313.71	48.04	1259.21
समीकरण 4 - निर्भर चर : भारत का कुल निर्यात			
α	3.07	15.83	4.28
β (भारत का संगमरमर निर्यात)	1.29	-0.19	1.13
P	0.00	0.88	0.00
R^2	0.96	0.00	0.75
D.W.	1.71	2.20	2.04
F	378.81	0.021	61.17

समीकरण 5 - निर्भर चर : राजस्थान का कुल निर्यात			
α	5.21	7.07	4.56
β (राजस्थान का संगमरमर निर्यात)	0.63	0.44	0.75
P	0.00	0.00	0.00
R^2	0.92	0.84	0.95
D.W.	0.97	1.64	0.80
F	152.48	33.53	454.59

समीकरण - 1 की तालिका से पता चलता है कि वर्ष 1996-2009 की समयावधि के दौरान भारत के संगमरमर निर्यात में औसतन 0.13 प्रतिशत की वृद्धि पाई गई। वहीं वर्ष 2010-2018 की समयावधि के दौरान β का मान 0.08 है जो कि 5 प्रतिशत बिन्दु की कमी को दर्शाता है। वहीं यदि हम सम्पूर्ण अध्ययन काल (वर्ष 1996-2018) में भारत के कुल संगमरमर निर्यात की दीर्घकालीन प्रवृत्ति देखें तो भारत के कुल संगमरमर निर्यात में β का मान 0.11 है जो कि सार्थक है (P का मान 0.05 से कम है) अर्थात् β = 0 या समय के साथ भारत के कुल संगमरमर निर्यात में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, इसे अस्वीकार करते हैं। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत के कुल संगमरमर निर्यात में सार्थक दीर्घकालीन प्रवृत्ति पाई गई है।

समीकरण - 2 से प्राप्त परिणाम से पता चलता है कि वर्ष 1996-2009 की समयावधि के दौरान राजस्थान के कुल संगमरमर निर्यात में 0.29 प्रतिशत की औसत वृद्धि पाई गई। वहीं वर्ष 2010-2018 की समयावधि में β का मान 0.17 है जो कि सार्थक है (P का मान 0.05 से कम है) अर्थात् β = 0 या समय के साथ राजस्थान के कुल संगमरमर निर्यात में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, इसे अस्वीकार करते हैं। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राजस्थान के कुल संगमरमर निर्यात में सार्थक दीर्घकालीन प्रवृत्ति पाई गई है।

समीकरण - 3 में आकलित परिणाम से पता चलता है कि वर्ष 1996-2009 के दौरान यदि राजस्थान के संगमरमर निर्यात में एक प्रतिशत वृद्धि होती है तो भारत के कुल संगमरमर निर्यात में 0.65 प्रतिशत की वृद्धि होगी। वहीं वर्ष 2010-2018 के अंतराल में β का मान 0.58 है। वहीं यदि सम्पूर्ण अध्ययन काल (वर्ष 1996-2018) में β का मान (0.66) सार्थक है (P का मान 0.05 से कम है) अर्थात् β = 0 या भारत के कुल संगमरमर निर्यात एवं राजस्थान के संगमरमर निर्यात में कोई संबंध नहीं है, इसे अस्वीकार करते है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि भारत के कुल संगमरमर निर्यात में राजस्थान के संगमरमर निर्यात का महत्वपूर्ण एवं सार्थक योगदान है।

समीकरण - 4 से प्राप्त परिणाम से पता चलता है कि वर्ष 1996-2009 के दौरान यदि भारत के संगमरमर निर्यात में एक प्रतिशत की वृद्धि होती है तो भारत के कुल निर्यात में 1.29 प्रतिशत की वृद्धि होगी। वहीं

वर्ष 2010-2018 के अंतराल में β का मान (-0.19) ऋणात्मक एवं निरर्थक है। वहीं सम्पूर्ण अध्ययन काल (वर्ष 1996-2018) में β का मान लोचदार (1.13) एवं सार्थक है (P का मान 0.05 से कम है) अर्थात् β = 0 या भारत के कुल निर्यात एवं भारत के संगमरमर निर्यात में कोई संबंध नहीं है, को अस्वीकार करते है। निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि वर्ष 2010 के पश्चात् भारत के संगमरमर निर्यात का भारत के कुल निर्यात में सार्थक योगदान नहीं है।

समीकरण - 5 की तालिका से प्राप्त परिणाम दर्शातें हैं कि वर्ष 1996-2009 के दौरान यदि राजस्थान के संगमरमर निर्यात में एक प्रतिशत की वृद्धि होती है तो राजस्थान के कुल निर्यात में 0.63 प्रतिशत की वृद्धि होगी। वहीं वर्ष 2010-2018 के अंतराल में β का मान 0.44 है। निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि राजस्थान में संगमरमर निर्यात का राजस्थान के कुल निर्यात में योगदान सार्थक तो है किन्तु यह न केवल बेलोच है (β का मान एक से कम) बल्कि यह वर्ष 2010 के पश्चात् कमी की प्रवृत्ति को भी दर्शाता है।

भारत में संगमरमर की संरचना

1- भारत में संगमरमर की संरचना का अध्ययन

संरचना का अर्थ - भारत में संगमरमर की संरचना का अर्थ यह है कि भारत द्वारा संगमरमर से संबंधित 2515, 6802 व 6815 एच.एस. कोड का कितना आयात-निर्यात किया जाता है। वर्तमान वर्ष 2019-20 में सर्वाधिक मात्रा में भारत द्वारा आयात संगमरमर के एच.एस. कोड 6815 का किया जाता है जिसका भारत के कुल संगमरमर आयात में अंश 53.30 प्रतिशत है उसके पश्चात् द्वितीय स्थान पर भारत द्वारा आयात संगमरमर के एच.एस. कोड 2515 का किया जाता है जिसका भारत के कुल संगमरमर आयात में अंश 35.06 प्रतिशत है।

इसी प्रकार निर्यात की बात करें तो वर्तमान वर्ष 2019-20 में भारत द्वारा संगमरमर के एच.एस. कोड 6802 का सर्वाधिक मात्रा में निर्यात किया जाता हैं जिसका भारत के कुल संगमरमर निर्यात में अंश 87.03 प्रतिशत है उसके पश्चात् संगमरमर के एच.एस. कोड 6815 (9.79 प्रतिशत) व 2515 (3.18 प्रतिशत) का भारत के कुल संगमरमर निर्यात में अंश बहुत कम है। अत: संगमरमर की संरचना अर्थात् वस्तुवार (एच.एस. कोड के अनुसार) निर्यात एवं आयात का विश्लेषण इस प्रकार है -

भारत द्वारा संगमरमर का वस्तुवार (Commodity Wise) निर्यात

वस्तुवार भारत द्वारा संगमरमर के निर्यात को निम्न तालिका में दर्शाया गया है और यह भी बताया गया है कि संगमरमर से संबंधित कौन-कौन से उत्पाद (Commodity) का भारत से विदेशों में सर्वाधिक निर्यात होता है तथा उस संगमरमर उत्पाद का भारत के कुल संगमरमर निर्यात में कितना योगदान है?

भारत द्वारा वस्तुवार संगमरमर का निर्यात

(मूल्य करोड़ में)

क्र.स.	एच.एस.कोड	1996-1997	2000-2001	2005-2006	2010-2011	2015-2016	2016-2017	2017-2018	2018-2019	2019-2020
1	2515	32.87 (4.48%)	66.2916 (0.05%)	91.489 (3.58%)	148.9578 (3.63%)	178.3543 (2.38%)	216.59 (2.88%)	273.9551 (3.78%)	278.1695 (3.33%)	222.1784 (3.18%)
2	6802	699.049 (95.26%)	1244.94 (94.08%)	2438.91 (95.52%)	3908.25 (95.28%)	6596.81 (87.89%)	6714.67 (89.20%)	6268.3837 (86.39%)	7151.4937 (85.51%)	6082.5489 (87.03%)
3	6815	1.94 (0.26%)	12.03 (0.91%)	22.91 (0.90%)	44.67 (1.09)	430.3265 (5.73%)	596.3483 (7.92%)	713.6744 (9.84%)	934.0156 (11.17%)	684.4072 (9.79%)
भारत द्वारा कुल संगमरमर का निर्यात		733.86 (0.62%)	1323.26 (0.65%)	2553.30 (0.56%)	4101.88 (0.36)	7505.49 (0.44%)	7527.61 (0.41%)	7256.01 (0.37%)	8363.68 (0.36%)	6989.13 (0.38%)
भारत द्वारा कुल निर्यात		118,817.97	203,571.01	456,417.86	1,136,964.26	1,716,384.40	1,849,433.55	1,956,514.53	2,307,726.19	1,860,696.78

स्रोत : विदेशी व्यापार महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित आँकड़ों का उपयोग करके स्वयं द्वारा गणना।

नोट : कोष्ठक ( ) में संगमरमर के सभी एच.एस. कोड के अंश को दर्शाया गया है।

उपर्युक्त तालिका से पता चलता है कि वर्ष 1996-97 से वर्ष 2019-20 तक निरंतर भारत द्वारा सर्वाधिक मात्रा में निर्यात संगमरमर के एच.एस. कोड 6802 का हो रहा है जिसका भारत द्वारा कुल संगमरमर निर्यात में योगदान सभी वर्षों में लगभग 80 से 95 प्रतिशत के मध्य रहा है। एच.एस. कोड 6802 के अन्तर्गत सभी वर्षों में जिस संगमरमर उत्पाद का सर्वाधिक मात्रा में निर्यात हो रहा है, वह है - संगमरमर ब्लॉक्स, संगमरमर टाइल्स एवं पॉलिशड संगमरमर।

भारत द्वारा संगमरमर का वस्तुवार (commodity wise) आयात :

वस्तुवार भारत द्वारा संगमरमर के आयात को निम्न तालिका में दर्शाया गया है और यह भी बताया गया है कि संगमरमर से संबंधित कौन-कौनसे उत्पाद (Commodity) का विदेशों से सर्वाधिक आयात होता है तथा उस संगमरमर उत्पाद का भारत के कुल आयात में कितना योगदान है?

भारत द्वारा वस्तुवार संगमरमर का आयात

(मूल्य करोड़ में)

क्र.स.	एच.एस.कोड	1996-1997	2000-2001	2005-2006	2010-2011	2015-2016	2016-2017	2017-2018	2018-2019	2019-2020
1	2515	39.2384 (76.32%)	88.312 (67.64%)	170.0945 (40.60%)	652.1105 (51.56%)	1702.373 (48.35%)	1533.5361 (37.78%)	1634.4023 (41.99%)	1464.8435 (30.75%)	1268.4221 (35.06%)
2	6802	0.9109 (1.77%)	11.1102 (8.51%)	196.5538 (46.91%)	504.0719 (39.86%)	1141.8715 (32.43%)	1154.7314 (28.45%)	699.4375 (17.97%)	653.9744 (13.73%)	421.3787 (11.65%)
3	6815	11.2666 (12.91%)	31.1342 (23.85%)	52.3491 (12.49%)	108.5229 (8.58%)	676.734 (19.22%)	1370.6628 (33.77%)	1558.1076 (40.03%)	2645.0962 (55.52%)	1928.5434 (53.30%)
भारत द्वारा कुल संगमरमर का आयात		51.4159 (0.04%)	130.5564 (0.06%)	418.9974 (0.06%)	1264.7053 (0.08%)	3520.9785 (0.14%)	4058.9303 (0.16%)	3891.9474 (0.13)	4763.9141 (0.13%)	3618.3442 (0.13%)
भारत द्वारा कुल आयात		138919.6647	230872.7604	660408.9033	1683466.956	2490305.538	2577675.367	3001033.434	3594674.612	2840358.604

स्रोत : विदेशी व्यापार महानिदेशालय द्वारा प्रकाशित आँकड़ों का उपयोग करके स्वयं द्वारा गणना।

नोट : कोष्ठक ( ) में संगमरमर के सभी एच.एस. कोड के अंश को दर्शाया गया है।

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि वर्ष 1996-97 से वर्ष 2017-18 तक निरंतर भारत द्वारा सर्वाधिक मात्रा में आयात संगमरमर के एच.एस. कोड 2515 का किया गया जिसके अन्तर्गत वर्ष 1996-97 से वर्ष 1998-99 तक कच्चे या अपरिष्कृत संगमरमर एवं टरवरटाईन का आयात किया गया है। वर्ष 2000-01 से वर्ष 2003-04 तक संगमरमर कटिंग ड्रेसर का अधिक आयात किया गया और वर्ष 2005-06 से निरंतर 2017-18 तक आयत एवं चौकोर आकार के संगमरमर एवं टरवरटाईन ब्लॉक/स्लैब का सर्वाधिक मात्रा में आयात किया गया। वर्तमान समय (वर्ष 2018-19 व 2019-20) में भारत द्वारा सर्वाधिक मात्रा में आयात संगमरमर के एच.एस. कोड 6815 का किया जाता है जिसका भारत द्वारा कुल संगमरमर आयात में योगदान 53 से 56 प्रतिशत के मध्य है। संगमरमर के एच.एस. कोड 6815 के अन्तर्गत संगमरमर ब्लॉक्स एवं टाइल्स का अधिक मात्रा में भारत द्वारा आयात किया गया।

विभिन्न देशों के प्रकट तुलनात्मक लाभ (Revealed Comparative Advantage) का अध्ययन

प्रकट तुलनात्मक लाभ (RCA) एक सूचकांक है जिसका उपयोग अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र में किसी देश के द्वारा उत्पादित वस्तु या सेवाओं के सापेक्ष लाभ या हानि के आकलन के लिए होता है। यह रिकार्डो के तुलनात्मक लाभ की अवधारणा पर आधारित है। इस सूचकांक को बलासा (वर्ष 1965) ने प्रतिपादित किया। अत: इसे बलासा सूचकांक भी कहा जाता है। बलासा के अग्रणी कार्य के बाद से तुलनात्मक लाभों की माप के लिए व्यापार प्रवाह के आधार पर प्रकट तुलनात्मक लाभ सूचकांक की गणना एक मानक विधि के रूप में अपनाई जा रही है।

RCA की अवधारणा किसी देश के अन्तर्गत उत्पादित वस्तुओं/सेवाओं की न केवल उच्च उत्पादकता को दर्शाता है (रिकार्डो द्वारा प्रतिपादित) बल्कि दूसरे देशों की तुलना में उस वस्तु की उत्पादकता क्षमता का भी आकलन करती है। RCA दो अंशों (Share) के अनुपातों को दर्शाता है। अंश (Numerator) किसी देश के किसी वस्तु का उस देश के कुल निर्यात में अंश को बताता है जबकि हर (Denominator) उस वस्तु

का सम्पूर्ण विश्व के कुल निर्यात में अंश को दर्शाता है। RCA का मान O से ∞ (Infinity) के मध्य हो सकता है।

$$\text{सूत्र - } \quad RCA = [X_{ij}/\sum X_j]/[X_{iworld}/\sum X_{world}]$$

X_{ij} = j देश द्वारा i वस्तु का निर्यात

$\sum X_j$ = j देश का कुल निर्यात

X_{iworld} = वस्तु i का पूरे विश्व द्वारा निर्यात

$\sum X_{world}$ = विश्व का कुल निर्यात

RCA>1 अर्थात् यदि RCA का मान एक से अधिक होने पर उस देश को उस वस्तु का तुलनात्मक लाभ अधिक प्राप्त हो रहा है। यदि RCA<1 अर्थात् RCA का मान 1 से कम है तो देश को उस वस्तु से तुलनात्मक हानि प्राप्त हो रही है।

उपर्युक्त सूत्र का उपयोग करके निम्न तालिका में हमने संगमरमर का देशवार RCA निकाला है जिसके अन्तर्गत शीर्ष 12 देशों का वर्ष 2001 से वर्ष 2018 तक संगमरमर के RCA का आकलन किया है।

शीर्ष 12 संगमरमर उत्पादक देशों का प्रकट तुलनात्मक लाभ

वर्ष	यूएसए	चीन	यूके	इजिप्ट	ईटली	फ्रांस	कनाडा	इण्डोनेशिया	तुर्की	जर्मनी	मलेशिया	भारत
2001	0.445	3.045	0.534	8.848	6.724	0.813	0.650	0.430	6.604	0.509	0.078	5.678
2002	0.449	2.915	0.437	39.308	6.128	0.702	0.629	0.360	7.359	0.495	0.108	5.419
2003	0.498	2.671	0.458	9.790	5.683	0.695	0.573	0.434	8.246	0.511	0.084	5.654
2004	0.573	2.428	0.594	21.432	5.425	0.726	0.547	0.438	8.971	0.489	0.073	4.532
2005	0.638	2.521	0.658	10.643	5.073	0.764	0.479	0.464	9.718	0.511	0.099	4.775
2006	0.723	2.445	0.690	9.681	4.625	0.731	0.483	0.475	10.119	0.493	0.057	4.926
2007	0.657	2.344	0.763	9.459	4.378	0.760	0.496	0.574	9.852	0.490	0.096	4.814
2008	0.600	2.505	0.798	9.479	4.385	0.773	0.484	0.592	9.817	0.566	0.078	4.289
2009	0.532	2.526	0.747	18.219	4.029	0.702	0.551	0.531	10.210	0.512	0.072	3.463
2010	0.643	2.405	0.757	9.080	4.104	0.812	0.498	0.531	12.651	0.595	0.086	3.699
2011	0.687	2.569	0.794	7.134	4.011	0.909	0.487	0.462	11.889	0.649	0.048	2.867
2012	0.672	2.418	0.772	10.592	4.137	0.892	0.463	0.396	11.640	0.594	0.059	3.113
2013	0.669	2.378	0.653	11.598	4.055	0.870	0.422	0.368	12.571	0.539	0.057	3.025
2014	0.737	2.300	0.846	9.523	3.817	0.895	0.406	0.337	11.059	0.562	0.048	3.028
2015	0.715	2.411	0.751	8.099	3.509	0.782	0.424	0.283	9.662	0.509	0.042	2.999
2016	0.761	2.238	0.786	7.485	3.452	0.819	0.494	0.293	9.474	0.563	0.047	3.194
2017	0.763	1.985	0.870	6.201	3.644	0.897	0.534	0.293	11.022	0.663	0.054	3.170
2018	0.774	2.026	0.844	6.261	3.466	0.906	0.531	0.281	9.835	0.779	0.072	3.100

स्रोत : - अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार केन्द्र द्वारा प्रकाशित आँकड़ों का उपयोग कर स्वयं द्वारा आकलन।

उपर्युक्त तालिका को देखने से स्पष्ट होता है कि तुर्की, इजिप्ट, इटली, भारत व चीन को संगमरमर उत्पादन से तुलनात्मक लाभ अधिक प्राप्त हो रहा है क्योंकि इनका RCA का मान एक से अधिक है इसी तरह यू.एस.ए., यू.के., फ्रांस, कनाडा, इण्डोनेशिया, जर्मनी एवं मलेशिया को संगमरमर से तुलनात्मक लाभ नहीं मिल रहा है क्योंकि इन सभी देशों में RCA का मान एक से कम है। यदि हम भारत की बात करें तो वर्ष 2001 में RCA का मूल्य 5 था जो धीरे-धीरे कम होकर वर्ष 2018 में RCA का मूल्य 3 हो गया अत: भारत को संगमरमर निर्यात से तुलनात्मक लाभ तो प्राप्त हो रहा है किन्तु इसमें धीरे-धीरे कमी आ रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. अक्दूल गफ्फार रासिन (2012). "ए कम्परेसिव स्टडी ऑफ मार्बल इण्डस्ट्री इन अफगानिस्तान", रिसर्च एण्ड स्टेटिस्टिक्स डिपार्टमेण्ट अफगानिस्तान इनवेस्टमेण्ट सपोर्ट एजेन्सी
2. अज्ज़ा आई केडिंल एवं तेरेक एच सेलिम (2003). "करेक्टरस्टिक्स ऑफ द मार्बल इण्डस्ट्री इन इज़िप्ट" द अमेरिकन युनिवरसिटी इन केरियो रेसपेक्टीवली
3. अज्ज़ा केण्डिल एण्ड सेलीम (2013). "करेक्टरस्टिक्स ऑफ द मार्बल इण्डस्ट्रिज इन इजिप्ट" डिपार्टमेन्ट ऑफ इकोनॉमिक्स एट द अमेरिकन युनिवरसिटी पृ.सं. 25-33
4. अहमद अबूहनीह, सादिक अबेदलाल एवं आफीक हसन (2013). "सस्टेनबल डेवलपमेण्ट ऑफ स्टॉन एण्ड मार्बल सेक्टर इन फिलिस्तीन", जर्नल ऑफ क्लिनर प्रोडक्शन, www.elsevier.com/locate/jclepro
5. ए. म. गौर (1997). " आजाद भारत, आओ, मकराना मार्बल से मुलाकात करें, एम. बी. प्रिन्टर्स, जयपुर अंक - 1 पृ. सं. - 36
6. ए. रानिया, हज्जा (2011). "मार्बल एण्ड ग्रेनाइट वेस्ट : केरेक्टेराइजेशन एण्ड युटीलाइजेशन इन कंक्रीट ब्रिक्स" इन्टरनेशनल जनरल ऑफ बायोसाइंस, बॉयोकेमेस्ट्री एण्ड बॉयोफोरमेटिक्स वॉल्यूम। नम्बर 4, नवम्बर।